P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-9* December- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

उत्तराखंड में पर्यटक आगमन का सांख्यिकीय विश्लेषण

ऋचा खरे
पूर्व शोध छात्रा,
भूगोल विभाग,
डी० बी० एस० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून,
उत्तराखंड

विनोद चंद्र पांडेय
रीडर एवं विभागाध्यक्ष,
भूगोल विभाग,
डी० बी० एस० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून,
उत्तराखंड

सारांश

उत्तराखण्ड हिमालय का हृदय स्थल है तथा यह देव भूमि के नाम से भी प्रसिद्ध है। पर्यटकों के लिये यह भूमि एक सम्पूर्ण पर्यटन स्थल है जो कि धार्मिक तीर्थ यात्रा के साथ कई प्राकृतिक, ऐतिहासिक और अभ्यारण स्थलों को समाहित किये हुए हैं। यहाँ प्रति वर्ष अनेक देशी और विदेशी पर्यटकों का आगमन होता हैं। उत्तराखंड टूरिज्म विभाग के अनुसार, उत्तराखंड में वर्ष 2000 से 2012 तक पर्यटकों की संख्या में लगभग 17 मिलियन की वृद्धि हुई है। वर्ष 2013 की आपदा से उबरने के बाद वर्ष 2014 में पुनः गति को प्राप्त करते हुए पर्यटक संख्या में लगभग 10% की वृद्धि देखी गई है। जहां पर वर्ष 2015 में 24 लाख पर्यटक आये थे वही इनकी संख्या बढ़कर वर्ष 2025 में 57.72 लाख होने की सम्भावना है। जो कि सरकार के विकास कार्यो के सफलता को भी प्रदर्शित करता है। यह शोधपत्र उत्तराखंड के विगत तथा आने वाले वर्षो में पर्यटकों की संख्या को ध्यान में रखते हुए राज्य की वर्तमान पर्यटन कि स्थिति की व्याख्या करता है।

मुख्य शब्द : उत्तराखंड, पर्यटन, पर्यटक आगमन, तीर्थ स्थल, प्राकृतिक स्थल, धार्मिक स्थल, सांख्यिकीय अध्ययन।

प्रस्तावना

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व हमारे देश में जो पर्यटन स्थल थे, वे वास्तव में तीर्थ स्थल थे। उस समय लोग इन तीर्थों में धार्मिक भावना लेकर पर्यटन करने जाते थे। अब भी जितने देशी पर्यटक है उनमें 90 प्रतिशत से अधिक तीर्थ करने के उद्देश्य से पर्यटन करते है जिसे तीर्थाटन कहा जाता है। देश में जितने भी पर्यटन स्थल है उनमें 80 प्रतिशत से अधिक तीर्थ स्थल है बाकि ऐतिहासिक और प्राकृतिक स्थल है। अतः पर्यटन के मुख्य केंद्र तीर्थ स्थल ही है।

वास्तव में पर्यटन स्थल उन्हें कहा जाता है जहां लोग पर्यटन करने के लिए जाते है यह स्थल सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक या प्राकृतिक कुछ भी हो सकते हैं। बहुत से पर्यटन स्थल ऐसे हैं जहां प्राकृतिक सुषमा बहुत होती है एवं उनका ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धार्मिक महत्व भी होताहै। जैसे बद्रीनाथ, गंगोत्री, हरिद्वार, रुद्रप्रयाग आदि। हिमालय पर्वत स्थित होने की कारण, इन स्थानों की रमणीकता देखते ही बनती है। इन सब कारणों से यहां देसी तथा विदेशी पर्यटक आते रहते है।

अध्ययन के लिए चयनित उत्तराखंड में ऐसा कोई स्थल या क्षेत्र नहीं है जो पवित्र ना हो, तीर्थ स्थल ना हो, अथवा प्राकृतिक स्थल ना हो। अतः संपूर्ण उत्तराखंड पवित्र स्थलों तीर्थ स्थलों और पर्यटन स्थलों से भरा पड़ा है इसलिए इसे स्वर्ग का द्वार कहा जाता है। वास्तव में पर्यटक स्थल वह है जहां पर्यटक निरंतर आते रहते हैं, रुकते हैं, भ्रमण करते हैं, पर्यटन का आनंद लेते हैं, मनोरंजन करते हैं, सुख प्राप्त करते हैं तथा पर्यटन की दृष्टि से वहां सभी आवश्यक नागरिक सुविधाएं उपलब्ध होती हैं। यद्यपि सुविधाओं की दृष्टि से पर्यटक स्थलों को दो वर्गों में रखा जा सकता है–

1. विकसित पर्यटन स्थल
2. अविकसित पर्यटन स्थल

विकसित पर्यटन स्थल वह होते हैं जहां पर्यटन की दृष्टि से सभी आवश्यक साधन और सुविधाएं उपलब्ध होती हैं तथा जहां आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध नहीं है वे अविकसित पर्यटन स्थल हैं। ऐसे स्थलों पर पर्यटक केवल दिन में अवलोकनार्थ जाते है और शाम होने तक अपने गंतव्य स्थल पर वापस लौट आते है इस दृष्टि से देखा जाए तो उत्तराखंड के अधिकांश पर्यटन स्थल विकसित स्थलों की श्रेणी में आते हैं। जहां तीर्थ यात्रियों पर्यटकों को भ्रमण करने तथा भोजन और आवास आदि की उत्तम व्यवस्था उपलब्ध होती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उत्तराखंड राज्य के पर्यटन स्थलों का विश्लेषण करना।
2. प्रदेश के पर्यटन स्थलों की पहचान तथा उनका वर्गीकरण करना।
3. पर्यटक आगमन का सांख्यकीय विश्लेषण।

अध्ययन विधि

सरकारी एवं गैर सरकारी समंको पर आधारित। जिसके लिए इंटरनेट, पुस्तकों व विभिन्न शोध पत्रों का आश्रय लिया गया है।

प्रमुख परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोधपत्र में जिन प्रमुख परिकल्पना का परीक्षण एवं विश्लेषण किया गया है वह निम्नांकित है

1. विशिष्ट मौसम में पर्यटकों का आवागमन अधिक होता है।
2. उत्तराखंड के पर्यटन स्थलों का प्रभाव क्षेत्र बहुत व्यापक है जो देश में ही नहीं वरन विदेशों तक विस्तृत है।
3. पर्यटक आगमन स्थिति का अध्ययन ना केवल स्थान विशेष में लोगो कि रूचि बताता है बल्कि सरकार द्वारा किये गए विकास कार्यो का भी मूल्यांकन करता है ।

साहित्यवलोकन

पर्यटन भूगोल का अध्ययन कोई नवीन विषय नहीं है। प्राचीन समय में भी यह सांस्कृतिक क्षेत्रों की सांस्कृतिक विभिन्नताओ में स्पष्ट प्रदर्शित था। इसका वर्णन हेरोडोटस एवं स्ट्रेबो (63 ईशा वर्ष पूर्व से 20 ईसवी), रेटजेल (1844–1908) और विडाल डी. ला. ब्लाश (1845), ने अपने लेखो में किया है। इसके पश्चात विभिन्न विदेशी विद्वानों ने पर्यटन भूगोल के क्षेत्र महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। जैसे कि–एच.रॉबिंसन (1976) की "ए जियोग्राफी ऑफ़ टूरिज्म", डी. टूर्नक (1977) की "रुमानिया– दी जियोग्राफी ऑफ़ टूरिज्म",एस. मेडलिक (1972) ने "दी इकनोमिक इम्पोर्टेन्स ऑफ़ टूरिज्म " परतथा डी.मिल्टन (1993) की "जियोग्राफी ऑफ़ वर्ल्ड टूरिज्म" प्रमुख है। इसके अतिरिक्त देशी विद्वानों द्वारा:बी .ऍन .पूरी (1966) की "सिटीज ऑफ़ अन्सिएंट इंडिया", जी. के. पूरी (1986) की "ट्रेवल– टूरिज्म फॉर आल", आर. आचार्य (1980) की "टूरिज्म एंड कल्चरल हेरिटेज ऑफ़ इंडिया", ए. के. भाटिया (1978) की" टूरिज्म इन इंडियाः हिस्ट्री एंड डेवलपमेंट", तथा "टूरिज्म डेवलपमेंट प्रिंसिपल्स एंड प्रैक्टिसेज" (1966) प्रमुख है।

वर्तमान में कई भारतीय लेखकों ने उत्तरखंड पर्यटन के विभिन्न विषयो पर प्रकाश डाला है जिसमे से हिमाद्रि फुकन (2014) की "ए स्टडी ऑन टूरिज्म लोजिस्टिक्स इन दी स्पिरिचुअल साइट्स ऑफ हरिद्वार एंड ऋषिकेश इन उत्तराखंड", कला, चंद्र प्रकाश (2014) की "डेंगू, डिजास्टर एंड डेवलपमेंट इन उत्तराखंड हिमालयन रीजन ऑफ इंडिया रू चौलेंजेज एंड लेसंस फोर डिजास्टर मैनेजमेंट" एवं गर्ग, प्रदीप कुमार, की(2016)"पर्यटन उद्योग की अवधारणा एवं उत्तर प्रदेश के पर्यटन उद्योग में रोजगार की संभावनाओं का अध्ययन" प्रमुख है।

उत्तराखंड का संक्षिप्त परिचय, प्रमुख पर्यटन केंद्र एवं उनका वर्गीकरण

भारत के उत्तरी भाग में स्थित उत्तराखण्ड राज्य के द0प0 में उत्तर प्रदेश, उ0 प0 में हिमांचल प्रदेश, पू0 में तिब्बत स्थित है। उत्तराखण्ड हिमालय पर्वत पर बसा है। पौराणिक साहित्य में इसे केदारखण्ड के नाम से जाना जाता है। भारत का सबसे पवित्रतम क्षेत्र माना जाता है। ठण्डी जलवायु के साथ–साथ उत्तराखण्ड कई नदियों का उद्‌गम क्षेत्र है। वेदों, पुराणों, एवं उपनिषदों में उत्तराखण्ड का बहुत वर्णन आता है। उत्तराखण्ड को प्राचीनकाल से ही पवित्र भूमि माना जाता है। 9 नवंबर 2000 को, उत्तराखंड भारत गणराज्य का 27 वां राज्य बनाया गया तथा इसको 13 जिलों के साथ दो डिवीजनों, गढ़वाल और कुमाऊं में विभाजित किया गया है। उत्तराखंड का कुल क्षेत्रफल 53,483 वर्ग किमी है, जिनमें से 88% पहाड़ी और 12% मैदानी भू भाग हैं। उत्तराखंड राज्य 28° 43′ से 31° 27′ उत्तरी अक्षांशो तथा 77° 34′ से 81° 21′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य फैला हुआ हैं। राज्य के उत्तरी भाग के अधिकांश हिस्सों में हिमालय की उच्च चोटियों और ग्लेशियरों द्वारा ढका हुआ है। उत्तराखंड की राजधानी देहरादून है, जो राज्य का सबसे बड़ा शहर है।

उत्तराखंड आर्थिकी की दृष्टि से भी अत्यंत मजबूत हैं तथा राज्य की विकास दर भारत में मध्य प्रदेश के बाद दूसरे स्थान पर है। इसकी सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) वित्त वर्ष– 2005 में 24,786 करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष 2012 में 60,898 करोड़ रुपये हो गयी हैं जो कि जीएसडीपी में 13.7% (2005–2012) वृद्धि हैं। उत्तराखंड में प्रति व्यक्ति आय 1,03,000 (2013) है जो राष्ट्रीय औसत 74,920 (2013) से अधिक है। साथ ही भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार, 2000 से 2009 तक राज्य में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 46.7 मिलियन अमरीकी डॉलर प्राप्त हुआ हैं।अधिकांश भारत की तरह, कृषि ही उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था का प्रमुख क्षेत्र है। अन्य प्रमुख उद्योगों में पर्यटन और पनबिजली, आईटी, जैव प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स और ऑटोमोबाइल उद्योग है। साथ ही सेवा क्षेत्र में मुख्य रूप से पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी, उच्च शिक्षा और बैंकिंग शामिल है। हालांकि पर्यटन क्षेत्र में अत्यंत संभावना होते हुए भी यह भारत के प्रमुख 10 पयर्टन राज्यों में भी शामिल नहीं हैं। लेकिन पिछले निकट वर्षो में हुए विकास से इसमें वृद्धि की संभवना बनी हुई हैं।

उत्तराखंड अपने मंदिरो एवं मठो की बहुलता के कारण हिन्दू धर्म में विशेष महत्व रखता हैं इसलिए यह देवभूमि के उपनाम से भी जाना जाता हैं। हिन्दुओ की दो सबसे अधिक पवित्र नदियाँ गंगा और यमुना उत्तराखंड से ही क्रमशः गंगोत्री और यमनोत्री से उत्पन्न होती हैं। यहाँ अनंत वर्षो से तीर्थ यात्री हरिद्वार में सिर्फ गंगा स्नान के लिए ही आते हैं और अपने पापो का क्षय हुआ मानते हैं। हिमालय में स्थित होने के कारण उत्तराखंड में प्राचीन

मंदिरो और मठो के अलावा भी कई पर्यटन स्थल हैं, जैसे वन भंडार, राष्ट्रीय उद्यान, पहाड़ी स्टेशन और पर्वतीय चोटियां, जो बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। अतः राज्य को पर्यटन कि दृष्टि से चार प्रमुख भागो में विभाजित किया जा सकता है : (1) धार्मिक या तीर्थ पर्यटन स्थल, (2) प्राकृतिक पर्यटन स्थल, (3) ऐतिहासिक पर्यटन स्थल तथा (4) अल्प प्रचारित पर्यटन स्थल। इस वर्गीकरण के अनुसार उत्तराखंड के विभिन्न स्थलों को तालिका 1 में वर्गीकृत किया गया है तथा इन पर्यटन स्थलों की स्थिति को मानचित्र (चित्र 1) में भी दर्शाया गया है।

तालिका 1. उत्तखण्ड के विभिन्न पर्यटन स्थल

विषय	प्रमुख स्थान
तीर्थ स्थल	गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ, ऋषिकेश, हरिद्वार, जागेश्वर, श्री बद्रीनाथ, आदि बद्री, वृद्ध बद्री, योगध्यान बद्री, भविष्य बद्री, कल्पेश्वर, मदमहेश्वर महादेव, रुद्रनाथ तुंगनाथ, हेमकुंड साहिब, नानमटठा साहिब, गुरुद्वारा रीठा साहिब, नंदा देवी, पूर्णागिरी, देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, विष्णुप्रयाग, नंदप्रयाग, गुप्तकाशी, कालीमठ, ऊखीमठ, सुरकुण्डा देवी, मंथोलिंग मठ
प्राकृतिक पर्यटन स्थल	मसूरी, नैनीताल, फूलों की घाटी, अल्मोड़ा, कौसानी, औली, भीमताल, नौकुचिया ताल, रानीखेत, देहरादून, धनौल्टी
ऐतिहासिक पर्यटन स्थल	देहरादून, लाखामंडल, ऊखीमठ, पांडुकेश्वर, उत्तरकाशी, ऋषिकेश, हरिद्वार, रूपकुंड, सुरकुण्डा देवी, हेमकुंड साहिब, गंगोत्री, जोशीमठ, अल्मोड़ा, यमुनोत्री, पाताल भुवनेश्वर
अभ्यारण व वन्यजीव पर्यटन स्थल	जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क, राजाजी राष्ट्रीय उद्यान, नंदादेवी राष्ट्रीय उद्यान, हिरणय अभ्यारण्य, नील धार पक्षी विहार, गोविंद वन्यजीव अभ्यारण्य
अल्प प्रचारित पर्यटन स्थल	रानीखेत, कौसानी, मुक्तेश्वर, चोपता, चकराता, देवरा, पलायू, बागेश्वर, चमोली, पिरान कालियार, अल्मोड़ा, टिहरी, मुंसियारी, खिर्सू, लैंसडोन, रुड़की
अन्य पर्यटन स्थल	खिर्सू , छोटा कैलाश, हर्सिल, हर की दून

उत्तराखंड में हिन्दू धर्म के निम्न प्रमुख धार्मिक स्थल हैं– चार धाम (बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमनोत्री), पंचबद्री (श्री बद्रीनाथ, आदि बद्री, वृद्ध बद्री, योगध्यान बद्री और भविष्य बद्री), पंचकेदार (केदार नाथ, कल्पेश्वर, मदमहेश्वर महादेव, रुद्रनाथ और तुंगनाथ), पंचप्रयाग (देवप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग, नंदप्रयाग और विष्णुप्रयाग)। यह राज्य हिन्दुओ के अलावा अन्य धर्मो के धार्मिक स्थलों को भी समाहित किये हुए हैं जैसे कि पिरान कालियार शरीफ– मुसलमानों के लिए, गुरूद्वारा हेमकुंड साहिब– गुरुद्वारा नानमटठा साहिब– और गुरुद्वारा रीठा साहिब– सिखों के लिए, मंथोलिंग मठ– और इसके बुद्ध स्तूप–बौद्ध धर्म (तालिका 1) के तीर्थस्थल हैं।

उत्तराखंड मे 44 राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक और कुछ प्रसिद्ध हिल स्टेशन भी हैं। जैसे कि मसूरी, औली, धनोल्टी, चकराता, लैंसडोन, पौड़ी, अल्मोड़ा, कौसानी ,खिर्सू और रानीखेत कुछ लोकप्रिय पहाड़ी स्टेशन हैं। राज्य के पास 12 राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभ्यारण्य हैं, जो राज्य के कुल क्षेत्रफल के 13.8% प्रतिशत हैं। यह विभिन्न ऊंचाई (800 से 5400 मीटर) पर स्थित हैं। जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क का भारत का सबसे पुराना राष्ट्रीय पार्क एवं एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण है। जो कि टाइगर सरंक्षण के लिए जाना जाता हैं। साथ ही एक और प्रमुख राजाजी राष्ट्रीय उद्यान अपने हाथियों के लिए जाना जाता है। इसके अतिरिक्त, राज्य में फूलों की घाटी और चमोली जिले के नंदादेवी राष्ट्रीय उद्यान है, जो कि यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों में शामिल हैं। भारत हमेशा पर्वतारोहण, लंबी पैदल यात्रा और रॉक क्लाइम्बिंग के लिए एक प्रमुख गंतव्य रहा है। हिमालय पर्वतमाला की निकटता के कारण, यह जगह पहाड़ियों और पहाड़ों से भरे हुए है और ट्रेकिंग, स्कीइंग, रॉक क्लाइम्बिंग और पैराग्लाइडिंग के लिए उपयुक्त है। रूपकुंड एक ट्रेकिंग साइट होने की साथ एक झील में पाए गए रहस्यमय कंकाल के लिए जानी जाती है।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-9* December- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

चित्र 1. उत्तराखंड की विभिन पर्यटन स्थल (धार्मिक, प्राकृतिक, ऐतिहासिक एवं अल्प प्रचारित)

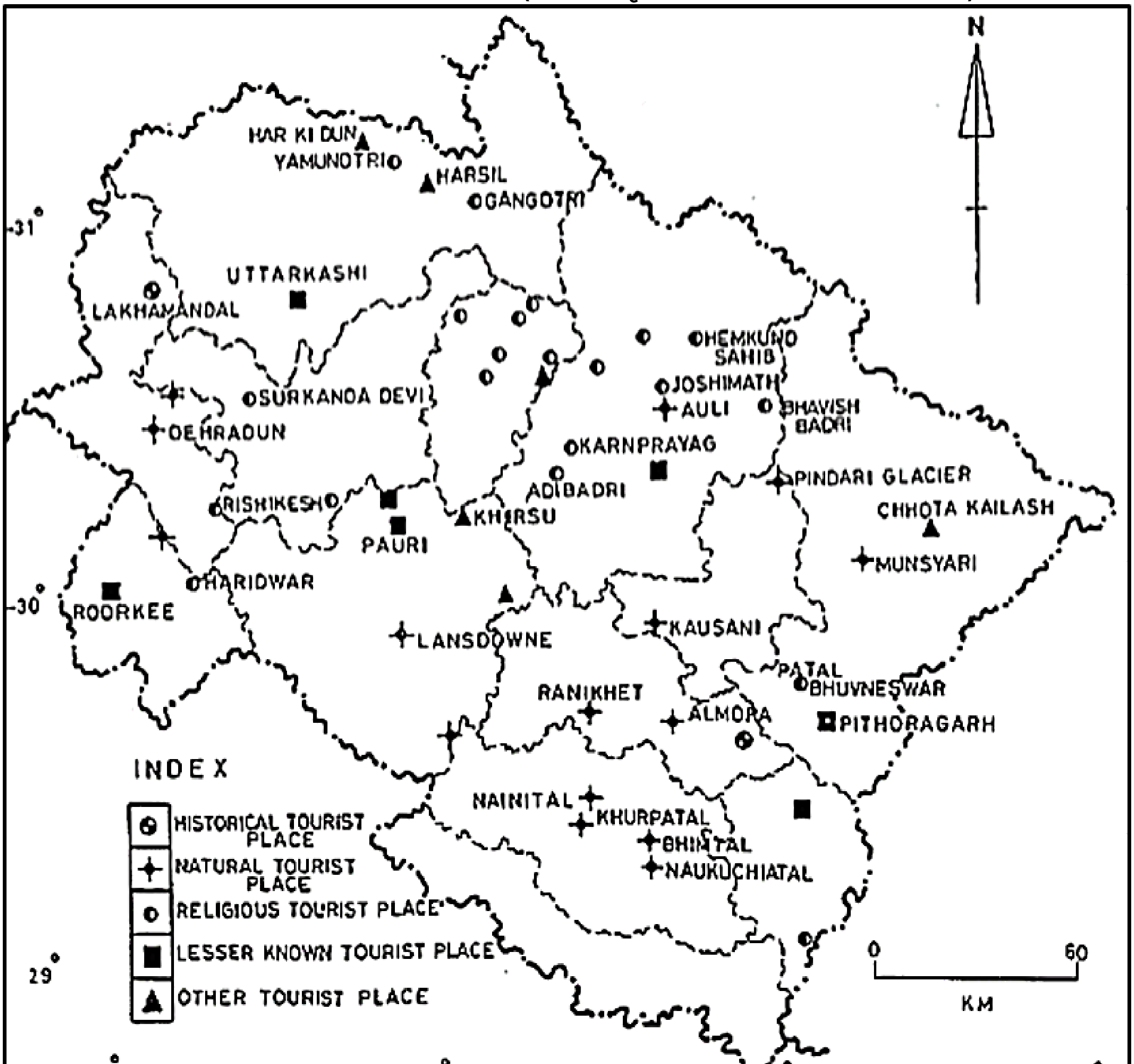

पर्यटक आगमन का सांख्यकीय विश्लेषण

उत्तराखंड में आने वाले देशी, विदेशी तथा कुल पर्यटकों की संख्या के आंकड़े वर्ष 2000 से 2025 तक तालिका 2 दिए गए है जिनमे से 2000–2015 तक के आंकड़े वास्तविक तथा 2018–2025 तक के आंकड़े अनुमानित है। इन आंकड़ो में प्रति वर्ष हुए परिवर्तनो को चित्र 2 में भी दिखाया गया है। तालिका 2 व चित्र 2 के विश्लेषण से निम्न बाते स्पष्ट होती है

1. देशी पर्यटको की सख्या विदेशी पर्यटको की तुलना में लगभग नगण्य है जो की प्रति वर्ष आने वाले कुल पर्यटक संख्या का केवल 0.5% है। जिसका प्रमुख कारण उत्तराखंड हिन्दुओ का एक प्रमुख तीर्थ स्थल होना है जहाँ प्रतिवर्ष लाखो की संख्या में हिन्दू श्रद्धालु हरिद्वार–ऋषिकेश केवल स्नान हेतु आते है।
2. कुल पर्यटक संख्या में वर्ष 2000 में 11 मिलियन से बढ़कर 2012 में 28 मिलियन तक बढ़ गई जो कि लगभग 17 मिलियन की वृद्धि है तथा यह वृद्धि प्रति वर्ष 1.84 दर से यह बढ़ी है।
3. वर्ष 2010 में कुल पर्यटक संख्या में अन्य वर्षो की तुलना में तेजी से वृद्धि देखी गई। जो कि राज्य में इस वर्ष कुंभ मेला के आयोजन के कारण हुई थी।
4. वर्ष 2013 में पर्यटक संख्या में 30% की तीव्र कमी देखी गई। जिसका कारण राज्य में इस वर्ष आई भयंकर बाढ़ और भूस्खलन था।
5. वर्ष 2014 पर्यटक संख्या अपनी यथा गति पुनः प्राप्त करते हुए 10% की वृद्धि हुई।

इसके अतिरिक्त, वर्ष 2015 की तुलना में देशी तथा विदेशी पर्यटक संख्या में वर्ष 2025 में क्रमशः करीब 2.4 तथा 2.3 गुना बढ़ने का अनुमान लगाया गया है अर्थात वर्ष 2025 तक पर्यटक संख्या 57.72 मिलियन तक पहुंचने कि संभावना है। ध्यान दे कि यह अनुमानित गणना विगत वर्षो की वृद्धि दर तथा भारत सरकार की पर्यटन नीति की गभीरता को देखते हुए की गई है।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-9* December- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

तालिका 2. उत्तराखंड में आने वाले पर्यटकों की संख्या

वर्ष	उत्तराखंड में आने वाले पर्यटकों की संख्या		
	स्वदेशी पर्यटक (मिलियन)	विदेशी पर्यटक (मिलियन)	कुल पर्यटक (मिलियन)
2000	11.08	0.057	11.137
2001	10.55	0.055	10.605
2002	11.65	0.056	11.706
2003	12.93	0.064	12.994
2004	13.83	0.075	13.905
2005	16.28	0.093	16.373
2006	19.36	0.096	19.456
2007	22.15	0.106	22.256
2008	23.06	0.112	23.172
2009	23.15	0.118	23.268
2010	30.97	0.136	31.106
2011	26.67	0.143	26.813
2012	28.29	0.125	28.415
2013	19.94	0.097	20.037
2014	21.99	0.102	22.092
2015	24.12	0.109	24.229
2018 (अनुमानित)	32.8	0.131	32.931
2020 (अनुमानित)	38.5	0.15	38.65
2023 (अनुमानित)	47.88	0.22	48.1
2025 (अनुमानित)	57.46	0.26	57.72

चित्र 2. उत्तराखंड में आने वाले कुल पर्यटकों का प्रति वर्ष हुए परिवर्तन का ग्राफीय प्रदर्शन

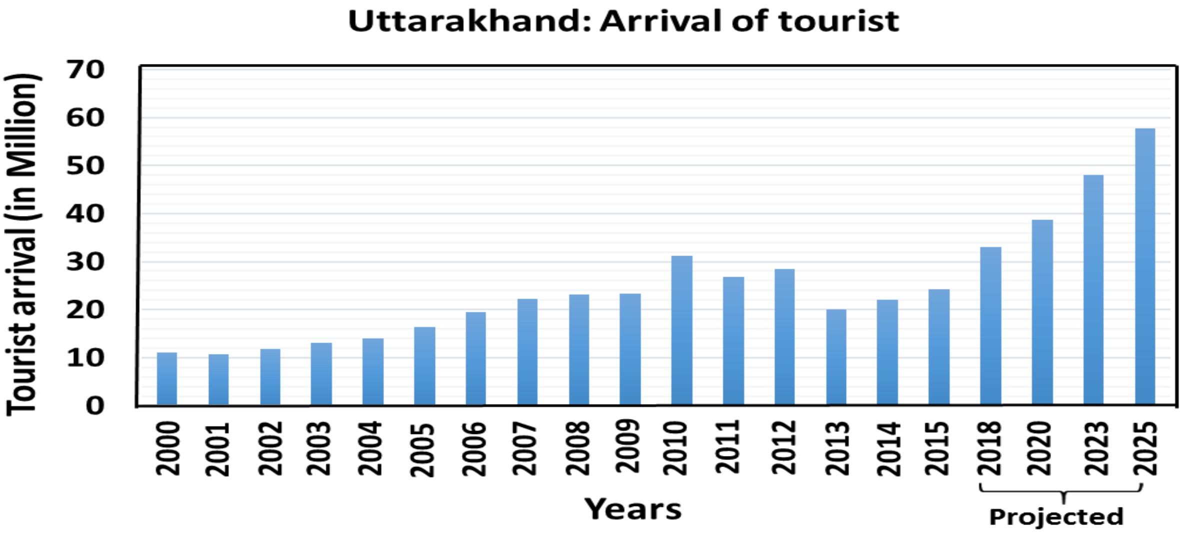

यू एन डब्लू टी ओ द्वारा किए गए एक संक्षिप्त सर्वेक्षण के अनुसार उत्तराखंड में आने वाले विदेशी पर्यटकों में से 58.2% –यात्रा/छुट्टी के लिए, 21.9%– स्वास्थ्य/योग के लिए और लगभग 19.4%– तीर्थयात्रा/धार्मिक कार्यो के लिए आते है । इसके अतिरिक्त, इन विदेशी पर्यटकों में से 59% को प्राकृतिक सुंदरता, 51.3% को ट्रेकिंग तथा 52.1% को आध्यात्मिक केंद्र अधिक आकर्षित करते है यह विदेशी पर्यटक मुख्य रूप से अमेरिका, इजराइल, ऑस्ट्रेलिया, इटली, जर्मनी और नेपाल से उत्तराखंड में आते है तथा इनके लोकप्रिय स्थलों में ऋषिकेश, हरिद्वार, गंगोत्री, उत्तरकाशी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, औली, नैनीताल और गौमुख प्रमुख है।

दूसरे ओर घरेलू पर्यटकों में से 44.2% का मुख्य उद्देश्य तीर्थ/धार्मिक यात्रा तथा 43.6% – छुट्टी/ पर्यटन स्थलों के भ्रमण लिए आते है। घरेलू पर्यटकों को भी प्राकृतिक सौंदर्य और ट्रैकिंग अधिक आकर्षित करती है। उत्तराखंड आने वाले घरेलू पर्यटक मुख्य रूप से क्रमशः दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र से आते है।घरेलू पर्यटकों के भी लिए सबसे लोकप्रिय स्थलों में हरिद्वार, ऋषिकेश, नैनीताल, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री,

उत्तरकाशी, मसूरी, यमुनोत्री, अल्मोड़ा, रानीखेत और देहरादून आते है।

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड राज्य के पर्यटन स्थल, भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक, दृष्टिकोण, से अति उत्तम है। इन पर्यटन स्थलों पर पर्यटन की पर्याप्त सम्भावनायें विद्यमान हैं। तीर्थ स्थलों पर स्थित धार्मिक स्थलों, मन्दिरों व अन्य पर्यटन स्थलों के योजनाबद्ध विकास के फलस्वरूप तीर्थ स्थलों का तथा पर्यटन स्थलों का विकास निश्चित है।

पर्यटकों का सांख्यकीय विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है की वर्ष 2000 से 2012 तक पर्यटकों की संख्या में लगभग 17 मिलियन की वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त वर्ष 2013 कि आपदा के बाद भी 2014 में लगभग 24 लाख पर्यटको का आगमन हुआ जो कि वर्ष 2013 कि तुलना में 10% अधिक थी। विगत वर्षो की वृद्धि दर तथा भारत सरकार की पर्यटन नीति की गभीरता को देखते हुए वर्ष 2025 तक पर्यटक संख्या में लगभग 57.72 मिलियन तक होने की संभावना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Uttarakhand tourism policy (2017), Department of Tourism, Government of Uttarakhand, India, pp 13-15*
2. *Vethirajan C. and Nagavallis, S. (Nov. 2014), Trends and Growth of Tourism Sector in India– A Research Perspective, Paripex- Indian journal of Research, Volume 3, Issue 11, pp 9-11*
3. *World Travel and Tourism Council (2016), Travel and Tourism-Economic impact 2015, pp 1-3*
4. *Ministry of Tourism (2015), India tourism statistics at glance, New Delhi, India, pp 5-6*
5. *गुप्ता, पी. दास (2004), पर्यटन एक अध्ययन मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ संख्या 64–66*
6. *प्रदीप कुमार गर्ग (2016), पर्यटन उद्योग की अवधारणा एवं उत्तर प्रदेश के पर्यटन उद्योग में रोजगार की संभावनाओं का अध्ययन, Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika, Vol 4, Issue 4, pp 79-84*
7. *Himadri Phukan (Sep. 2014), A Study on Tourism Logistics in the Spiritual Sites of Haridwar and Rishikesh in Uttarakhand, International Journal of Emerging Technology and Advanced Engineering, Vol 4, Issue 9, pp 165-170*
8. *नेगी, जगमोहन (1999), पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 78*
9. *किरौला, उदय, एवं कंठनिया, संजय, उत्तराखंड एक अध्ययन, प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, साहित्य भवन, आगरा, 2008, पृष्ठ संख्या,143*
10. *"Madhya Pradesh now fastest growing state, Uttarakhand pips Bihar to reach second". The Indian Express. 8 September 2014*
11. *https://www.lonelyplanet.com/india/uttarakhand-uttaranchal/places*
12. *Kala, Chandra Prakash (June 2014), Deluge, disaster and development in Uttarakhand Himalayan region of India: Challenges and lessons for disaster management, International Journal of Disaster Risk Reduction, Vol 8, pp 143-152*
13. *Mahar, Sanjay Singh; Bagri, S. C. (2010), Tourism in the Himalayas: An Evaluation of Tourist Perception, Expectation Quotient and Satisfaction Level in the Bhilangana River Valley of Uttarakhand State, Journal of Tourism , Vol. 11 Issue 1, pp 21-42*